

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 4, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 3, विकास, फाल्सपाथ्स, अपोलिनेरियनवाद और नेस्टोरियनवाद

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और क्राइस्टोलॉजी पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 3, विकास, झूठे रास्ते, अपोलिनेरियनवाद और नेस्टोरियनवाद।

हम पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी के बारे में अपने विचार जारी रखते हैं क्योंकि हम चाल्सेडन की परिषद के और करीब पहुँचते हैं, इस विषय, अवतार के व्यक्ति के बारे में स्पष्ट रूप से सोचते हैं।

त्रित्ववादी चर्चा से संबंधित है अवतार के विषय का प्रश्न। प्रकृति-व्यक्ति भेद को देखते हुए, हमें यह प्रश्न पूछने की आवश्यकता है कि वास्तव में कौन देहधारी हुआ? अवतार का विषय कौन है? शास्त्र स्पष्ट है, वचन देहधारी हुआ, यूहन्ना 1:14। यह पुत्र का व्यक्ति था जो देहधारी हुआ। इस कथन से दो महत्वपूर्ण बिंदु निकलते हैं।

सबसे पहले, अवतार में, यह दिव्य प्रकृति नहीं थी जो देहधारी हुई या मानव प्रकृति को ग्रहण किया, जैसे कि प्रकृतियाँ व्यक्तिगत विषयों के रूप में कार्य कर रही हों। न ही पिता या आत्मा देहधारी हुए। इसके बजाय, यह ईश्वर पुत्र, ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति था, जो देहधारी हुआ।

अवतार से पहले, पुत्र, अनंत काल से, पिता और आत्मा के साथ, एक दिव्य प्रकृति में समान रूप से साझा, धारण और अस्तित्व में था, और इस प्रकार पूर्ण संवाद और प्रेम में रहता था, परस्पर एक दूसरे में निवास करता था। यही कारण है कि पिता, पुत्र और आत्मा पूरी तरह से और समान रूप से ईश्वर हैं, भले ही, व्यक्तियों के रूप में, वे अपरिवर्तनीय रूप से अलग हैं, अवतार द्वारा प्रदर्शित एक तथ्य। दूसरा, यह पुष्टि करना कि अवतार का विषय पुत्र का व्यक्ति है, केवल यह कहना नहीं है कि पुत्र एक व्यक्ति है जिसके पास दो स्वभाव हैं, जितना कि यह कथन सत्य है।

बल्कि, यह पुष्टि करना है कि मसीह के अस्तित्व के केंद्र में मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर रहने वाले पुत्र का व्यक्तित्व है। यह पुष्टि उन लोगों के खिलाफ है जो प्रारंभिक चर्च में मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अधिक मानते थे जो परमेश्वर पुत्र द्वारा निवास किया गया था। अवतार दिव्य पुत्र का व्यक्तिगत कार्य है जिसने जानबूझकर, स्वेच्छा से और बलिदानपूर्वक एक सेवक का रूप धारण करने और पिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता और हमारे उद्धार के लिए खुद को गरीब बनाने का फैसला किया।

फिलिप्पियों 2:7, 2 कुरिन्थियों 8:9। इसके अलावा, हमें यह भी पुष्टि करनी चाहिए कि पुत्र हमेशा से वही रहा है जो वह परमेश्वर पुत्र के रूप में था। उसकी पहचान नहीं बदली, न ही वह सभी दिव्य गुणों को धारण करने और अपने सभी दिव्य कार्यों और विशेषाधिकारों को निभाने और उनका प्रयोग करने में बदल गया। फिर भी अब, मानव स्वभाव को व्यक्तिगत एकता में लेने से,

वह पूरी तरह से मानव जीवन जीने और अनुभवों और रिश्तों की एक पूरी नई श्रृंखला में प्रवेश करने में सक्षम है।

अवतार के व्यक्तिगत विषय के रूप में पुत्र अब मानव शरीर और मानव आत्मा में जीवन का अनुभव करने में सक्षम है। वह मानवीय पीड़ा और मानवीय प्रलोभनों का अनुभव करता है और यहाँ तक कि मृत्यु का स्वाद भी चखता है। फिर से, जैसा कि मैकलियोड ने उल्लेख किया है, अवतार से पहले और उसके अलावा, परमेश्वर ऐसी चीज़ों को अवलोकन द्वारा जानता था।

लेकिन अवलोकन, भले ही वह सर्वज्ञता का हो, व्यक्तिगत अनुभव से कम होता है। इस प्रकार, यह वही है जो अवतार ने ईश्वर के लिए संभव बनाया, मानव होने का एक वास्तविक व्यक्तिगत अनुभव। इसका तात्पर्य यह है कि मरियम में पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ धारण किया गया बच्चा, जो पैदा हुआ, जो बुद्धि और कद में बड़ा हुआ और मनुष्यों में ईश्वर के अनुग्रह में बढ़ा, ल्यूक 2.52, वही दिव्य व्यक्ति था जो पिता और आत्मा के संबंध में अनंत काल तक पुत्र रहा था।

देहधारी व्यक्ति केवल एक मनुष्य नहीं था जिसमें परमेश्वर वास करता था या यहाँ तक कि परमेश्वर की आत्मा द्वारा अद्वितीय रूप से सशक्त व्यक्ति भी नहीं था। इसके बजाय, नासरत का यीशु परमेश्वर का पुत्र है, जो व्यक्तिगत रूप से पृथ्वी पर रहता है और अनुभव करता है कि हमारे लिए, और हमारे उद्धार के लिए मनुष्य होने का क्या अर्थ है। वास्तव में, चर्च ने इस पर जोर दिया क्योंकि यह वही है जो पवित्रशास्त्र सिखाता है, और यह ठीक वैसा ही उद्धारकर्ता है जिसकी हमें आवश्यकता है।

हमें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जो हमारा प्रतिनिधित्व करने के लिए एक मनुष्य हो। लेकिन इससे भी अधिक, हमें प्रभु के आने और बचाने की आवश्यकता है। उद्धार प्रभु का है, और जब तक प्रभु नहीं आता, पीड़ित नहीं होता, और क्रूस पर मरता नहीं, तब तक उसकी मृत्यु में हमारे उद्धार को पूरा करने की कोई शक्ति या प्रभाव नहीं होगा।

और ईश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति के रूप में पुत्र ने अपनी क्षमताओं की पूरी श्रृंखला के साथ एक मानवीय स्वभाव को अपने दिव्य व्यक्तित्व में शामिल करके ऐसा किया, साथ ही उस दिव्य स्वभाव को भी जो उसके पास हमेशा से था। फेयरबर्न ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि प्रारंभिक चर्च का मूल दावा यह था कि एक व्यक्ति जो यीशु मसीह है, वह ईश्वर पुत्र है। यह ईश्वर पुत्र एक व्यक्ति के रूप में था, न कि केवल एक दिव्य स्वभाव, जो स्वर्ग से नीचे आया था।

यह परमेश्वर पुत्र ही था जिसने एक व्यक्ति के रूप में मानवता को अपने साथ जोड़ा, न कि दो स्वभावों को एक करके एक नया व्यक्ति बनाया। यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि पुत्र का व्यक्तित्व जो दिव्य स्वभाव रखता है, दोनों स्वभावों में और उनके माध्यम से कार्य करने में सक्षम है। अवतार से पहले, पुत्र ने पिता और आत्मा के साथ दिव्य स्वभाव में और उसके माध्यम से कार्य किया।

लेकिन अब, अपने पिता की आज्ञाकारिता में और आत्मा की एजेंसी द्वारा पुत्र की व्यक्तिगत कार्रवाई के परिणामस्वरूप, वह अपने मानवीय स्वभाव में और उसके माध्यम से भी कार्य करने में सक्षम है। यह समझ मानती है कि प्रकृति, चाहे वह दैवीय हो या मानवीय, उसमें गुण,

विशेषताएँ या क्षमताएँ होती हैं जो उसे वह बनाती हैं जो वह है। यह भी मानती है कि प्रकृतियाँ कभी भी अपने आप में मौजूद नहीं होती हैं।

उनके पास हमेशा एक व्यक्ति होता है जिसमें प्रकृति निवास करती है। इस मामले में, अवतार के मामले में, फिर फेयरबर्न ने चर्च के साथ मिलकर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला है, और मैं उद्धृत करता हूँ: ईश्वर पुत्र, तीन और एकमात्र व्यक्तियों में से एक, जिनके पास दिव्य प्रकृति है, ने अपने स्वयं के व्यक्तित्व में एक पूर्ण मानव प्रकृति, उन विशेषताओं और घटकों का एक पूर्ण पूरक जोड़ा जो एक मानव को बनाते हैं। इस तरह, एक ही व्यक्ति, त्रिदेव का दूसरा व्यक्ति, दिव्य और मानव दोनों था।

वह दिव्य था क्योंकि अनंत काल से, उसके पास दिव्य प्रकृति थी। अवतार के बाद, वह मानव भी था क्योंकि उसने खुद को देहधारी बना लिया था, यानी, वे सभी विशेषताएँ जो एक इंसान को परिभाषित करती हैं। क्योंकि यह वही व्यक्ति था, जिसे हम अब यीशु मसीह कहते हैं, वह दिव्य और मानव दोनों था, वह एक ही समय में दो स्तरों पर जीने में सक्षम था।

वह ईश्वरीय स्तर पर जीवन जीता रहा, जैसा कि वह हमेशा से करता आया है, पिता के साथ संगति साझा करता रहा, ब्रह्मांड को बनाए रखता रहा, कुलुस्सियों 1:17 देखें, और जो कुछ भी परमेश्वर करता है। लेकिन अब वह उसी समय मानवीय स्तर पर जीने लगा, एक शिशु के रूप में गर्भ धारण किया और जन्म लिया, नासरत में बड़ा हुआ, किसी भी अन्य यहूदी लड़के की तरह शास्त्र सीखा, भूखा, प्यासा और थका हुआ रहा, और यहाँ तक कि मर भी गया, उद्धारण समाप्त। फेयरबर्न की प्रसिद्ध पुस्तक, *लाइफ इन द ट्रिनिटी*, पृष्ठ 143 और 44।

जाहिर है, यह पुष्टि अवतार पुत्र के बारे में कई वैध लेकिन कठिन सवाल उठाती है। चर्च के इतिहास में, चाहे वह एरियनवाद हो या अन्य विधर्मी विचार, और विशेष रूप से ज्ञानोदय के बाद से, गैर-रूढ़िवादी क्राइस्टोलॉजी की अपील में से एक रहस्य के क्षेत्रों को, उद्धारण चिह्नों में, समझाने की उनकी सतही क्षमता रही है। उदाहरण के लिए, 19वीं सदी के केनोनिज्म में, इसकी अपील का एक बड़ा हिस्सा यह है कि यह अवतार पुत्र के मनोविज्ञान को बेहतर ढंग से समझा सकता है, यह इस बात को नकारने का समाधान था कि अवतार पुत्र का अनुभवी ज्ञान एक साथ दो स्तरों पर संचालित होता है।

इसके बजाय, इसने तर्क दिया कि यीशु का अनुभवजन्य ज्ञान केवल मानवीय था क्योंकि उसने मनुष्य बनने में अपने दिव्य गुणों को अलग रखा था। हालाँकि, समस्या यह है कि इस व्याख्या ने बाइबिल की शिक्षा और चर्च की पुष्टि को त्याग दिया कि देहधारी पुत्र दो स्वभावों के कारण एक साथ दिव्य और मानवीय जीवन जीने में सक्षम था। उन्होंने एक बड़ी समस्या पैदा करके समस्या का समाधान किया।

बाद में सुधार काल में, चर्च की यह पुष्टि कि पुत्र एक साथ दो स्तरों पर रहने में सक्षम था, एक्स्ट्रा कैल्विनिस्टिकम के रूप में जानी जाने लगी। यह शब्द वास्तव में सुधारवादी धर्मशास्त्र पर लूथरन हमला है। यह लैटिन का एक्स्ट्रा या बाहर या बिना है।

कैल्विनिस्टिकम लैटिन में कैल्विनिस्टिक शब्द है। यह कैल्विनिस्टिक अतिरिक्त या बाहरी है, यह शिक्षा कि त्रिदेव का दूसरा व्यक्ति नासरत के यीशु में पूरी तरह से अवतरित हुआ, लेकिन चूँकि वह त्रिदेव का सदस्य है, और जब पुत्र मनुष्य बन गया, तो त्रिदेव कुलीन नहीं बन गए, इसलिए पुत्र भी पूरी तरह से बाहर या बिना अवतार के रहा। दूसरा व्यक्ति, पूरी तरह से अवतरित, दूसरा व्यक्ति बाहर ही रहा।

अन्यथा, त्रिदेव विस्फोटित हो गए हैं, और यह असंभव है। जैसा कि ई. डेविड विलिस ने बताया, तथाकथित अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम सिखाता है कि ईश्वर का शाश्वत पुत्र, अवतार के बाद भी, एक व्यक्ति बनाने के लिए मानव प्रकृति से जुड़ा हुआ था, लेकिन मांस तक सीमित नहीं था। लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अतिरिक्त कैल्विन के लिए नया नहीं था।

यह वही था जिसकी चर्च ने हमेशा पुष्टि की थी, यह देखते हुए कि दोनों प्रकृतियों का विषय पुत्र का व्यक्ति था। यही कारण है कि विलिस ने सही तर्क दिया कि कैल्विन के अतिरिक्त को एक्स्ट्रा कैथोलिकम, कैथोलिक एक्स्ट्रा, जिसका अर्थ है सार्वभौमिक चर्च, या एक्स्ट्रा पैट्रिस्टिकम, पैट्रिस्टिक एक्स्ट्रा कहा जाना चाहिए, क्योंकि यह पिताओं की शिक्षा थी। चर्च ने हमेशा यह स्वीकार करना आवश्यक समझा है कि चूँकि अवतार का विषय ईश्वर पुत्र है, इसलिए हमारे प्रभु यीशु, अपमान की स्थिति में भी, ईश्वर और मनुष्य दोनों के रूप में जीना, कार्य करना और अनुभव करना जारी रखते हैं।

जो व्यक्ति इन दोनों कामों को करने में सक्षम है, वह अवतार से पहले और बाद में एक ही है। आप जानते हैं, फिर भी अपने पिता की आज्ञाकारिता और आत्मा पर निर्भरता में, पुत्र ने अपने ईश्वरीय विशेषाधिकारों का प्रयोग करना जारी रखा, जैसा कि पिता ने अनुमति दी थी और इस मसीहाई मिशन के अनुरूप था, जबकि हमारे नए वाचा के प्रमुख के रूप में एक पूर्ण मानव जीवन भी जी रहा था। वास्तव में रहस्यमय है, लेकिन इसे स्वीकार करना आवश्यक है।

क्या त्रित्व स्थायी रूप से कम हो गया? नहीं, यह असंभव है। त्रित्व ईश्वर है, और फिर भी क्या पुत्र वास्तव में अवतार है? ओह हाँ, पूरी तरह से अवतार, पूरी तरह से अतिरिक्त। पिताओं के पास अवतार के दो अलग-अलग संस्करण थे।

शब्द मनुष्य क्राइस्टोलॉजी, शाश्वत शब्द, पुत्र, दूसरा व्यक्ति, अपने आप को एक पूर्ण मानव स्वभाव, शरीर और आत्मा लेता है। शब्द मांस क्राइस्टोलॉजी में, पुत्र अपने आप को एक मानव आत्मा के बिना केवल एक मानव शरीर लेता है। मैं हमेशा ईश्वर के लोगों और ईश्वर के लोगों के बारे में सम्मानपूर्वक बात करना चाहता हूँ; एक मित्र ने हाल ही में यह अच्छी तरह से कहा जब उसने कहा, मैंने पहले कभी इसके बारे में नहीं सोचा था।

और मैं जवाब देना चाहता था, मैंने नहीं सोचा था, लेकिन यह ठीक है। मैंने पहले कभी नहीं सोचा था कि यीशु के पास एक मानवीय आत्मा या आत्मा थी। मैं कहना चाहता था, ठीक है, जब तक आप इसे अस्वीकार नहीं करते, तब तक आप ठीक हैं।

किसी चीज़ के बारे में अनभिज्ञ होना ठीक है। उसी चीज़ को नकारना हमेशा ठीक नहीं होता। चाल्सीडॉन के रास्ते में, चर्च को मसीह की मानवता की प्रकृति से भी जूझना पड़ा।

निकेया से एक अनसुलझा सवाल यह था कि क्या मसीह के पास एक मानवीय आत्मा थी और इस प्रकार, एक पूर्ण मानवीय प्रकृति थी। वाल्टर टॉयिन और अन्य लोगों ने पहले ही मसीह की आत्मा के अस्तित्व पर जोर दिया था, मसीह की आत्मा के अस्तित्व पर। एरियस ने इसकी वास्तविकता से इनकार किया और मसीह में किसी तरह की मिश्रित प्रकृति के लिए तर्क दिया।

यहाँ तक कि एथनासियस जैसे निकेने रूढ़िवाद के कट्टर समर्थक भी इस मुद्दे पर पूरी तरह स्पष्ट नहीं थे। ऐसा लगता है कि उन्होंने सिखाया था, हाँ, यीशु के पास एक मानवीय आत्मा थी, अपोलिनारियस के विपरीत, जिसने कहा कि लोगो ने यीशु की आत्मा का स्थान ले लिया। इसलिए, यीशु में एक अपूर्ण मानवता थी।

नहीं, अथानासियस ने कहा कि उसके पास यह था, लेकिन ऐसा लगता है कि उसने कार्य नहीं किया। इसने कार्य नहीं किया। इसलिए वह रूढ़िवादी है, और फिर भी यह पूर्ण शब्द मैन क्राइस्टोलॉजी नहीं है।

उदाहरण के लिए, एरियनवाद के अथानासियस के खंडन में, वह कोई भेद नहीं करता, यीशु की मानव आत्मा का कोई उल्लेख नहीं करता, और ऐसा लगता है कि वह अवतार को एक पुत्र के रूप में मानता है जो मानव शरीर धारण करता है, लेकिन आत्मा नहीं। यह एक कारण है कि वह मसीह के आध्यात्मिक गुणों को लॉगोस के लिए जिम्मेदार ठहराता है, जबकि उसके जुनून को उसके शरीर के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। हालाँकि, अपोलिनेरियन विवाद के बाद, चर्च ने सावधानीपूर्वक जोर दिया कि अवतार में पुत्र ने मानव शरीर और आत्मा को ग्रहण किया, और मेरी समझ से अथानासियस ने भी ऐसा ही किया, हालाँकि मानव आत्मा ने बहुत कुछ नहीं किया।

फिर से, वह रूढ़िवाद के दायरे में है, लेकिन वह एक पूर्ण ईश्वर शब्द मनुष्य क्राइस्टोलॉजी की पुष्टि करने में अनिच्छुक है। उसने किया। यह शब्द मनुष्य है, लेकिन मनुष्य शब्द वास्तव में मनुष्य के आत्मा पहलू के संदर्भ में सक्रिय नहीं है।

प्रारंभिक चर्च में, मोटे तौर पर कहें तो, मसीह के मानव स्वभाव के बारे में सोचने के दो तरीके थे - वर्ड लोगोस मैन बनाम वर्ड लोगोस मांस। एरियन बहस में, और बाद में अपोलिनारियस के साथ, चर्च ने जोर देकर कहा कि बाइबिल की शिक्षा को समझने के लिए वर्ड-मैन दृष्टिकोण आवश्यक था।

एक शब्द मनुष्य क्राइस्टोलॉजी की आवश्यकता विशेष रूप से इच्छा के मुद्दे के बारे में चाल्सेडोनियन चर्चा के बाद स्पष्ट थी, जैसा कि चर्च के इस आग्रह से दर्शाया गया है कि अवतार पुत्र की दो इच्छाएँ थीं। एक शब्द मनुष्य दृष्टिकोण, डायथेलिटिज्म, उस दृष्टिकोण के विपरीत है कि उसके पास एक इच्छा थी, मोनोथेलिटिज्म, एक शब्द मांस दृष्टिकोण। हम इन विभिन्न विचारों को अलग करना चाहते हैं और एक रूढ़िवादी क्राइस्टोलॉजी के उद्भव के लिए उनके महत्व को उजागर करना चाहते हैं।

क्राइस्टोलॉजी के बीच का अंतर "एरियनवाद की धार्मिक चुनौती का खंडन करने के विभिन्न तरीकों से उत्पन्न हुआ, जिसने तर्क दिया कि चूंकि ईश्वर पुत्र ने कष्ट सहे और मर गया, इसलिए वह अगम्य होने के बजाय पारगम्य होना चाहिए और इसलिए पिता से कम होना चाहिए।" जवाब में, एंटीओचियन, एंटीओक के धर्मशास्त्रियों ने तर्क दिया कि जिसने कष्ट सहा और मर गया वह ईश्वर पुत्र नहीं था, और इस प्रकार, वे अभी भी पुष्टि कर सकते थे कि ईश्वर पुत्र अगम्य था और पिता के बराबर था।

लेकिन जैसा कि फेयरबर्न ने कहा है, इसने उन्हें एक ऐसे क्राइस्टोलॉजी की ओर अग्रसर किया जिसने लोगो को मनुष्य यीशु से अलग कर दिया और मोक्ष को यीशु के पीछे चलने वाले मानवीय मार्च के रूप में समझा, जिसे थियोडोर ने पहला युग कहा, अपूर्णता और, क्षमा करें, नैतिकता का, दूसरे युग की ओर जिसे पूर्ण मानव जीवन कहा जाता है, उद्धारण बंद करें। यही कारण था कि एंटीओचियन पुराने नियम को अधिक शाब्दिक तरीके से पढ़ने के लिए प्रवृत्त हुए, लेकिन यह उनका समग्र धर्मशास्त्र था जिसने इस तरह की व्याख्या को जन्म दिया, न कि इतिहास को अधिक गंभीरता से लेने की कोई विशेष इच्छा। इसके विपरीत, अलेक्जेंड्रियन दृष्टिकोण ने एरियनवाद का खंडन करते हुए पुष्टि की कि यह पुत्र का व्यक्ति था जिसने पीड़ा झेली लेकिन उसने अपने मानवीय स्वभाव में पीड़ा झेली, न कि अपने दिव्य स्वभाव में, इस प्रकार महत्वपूर्ण प्रकृति-व्यक्ति भेद का उपयोग किया।

इससे वे एक अलग क्राइस्टोलॉजी की ओर बढ़े, जो चर्च के रूढ़िवादी दृष्टिकोण के लिए महत्वपूर्ण है, अर्थात् ईश्वर पुत्र हमारे उद्धार में हर बिंदु पर सक्रिय विषय था, पिता और आत्मा के साथ संबंध में, उसके अवतार, जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, इत्यादि में। इस प्रकार, मसीह का वर्णन करने वाले पाठ की अलेक्जेंड्रियन व्याख्या, जैसा कि फेयरबर्न ने उल्लेख किया है, उद्धारण, उसके सभी कार्यों और अनुभवों को स्वयं लॉगोस को जिम्मेदार ठहराया, लेकिन लॉगोस ने जो किया वह उसके मानवीय स्वभाव के अनुरूप था और उसने जो किया वह उसके नए अपनाए गए मानवीय जीवन जीने के तरीके के अनुरूप था, के बीच विभाजित किया। एंटीओचियन, विशेष रूप से नेस्टोरियस ने कुछ कार्यों को लॉगोस और अन्य को मनुष्य यीशु को जिम्मेदार ठहराते हुए समान अंशों से निपटा, उद्धारण बंद करें।

नतीजा यह है: इन स्कूलों के बीच मतभेदों का संबंध मसीह और मोक्ष के बारे में अलग-अलग धर्मशास्त्रों से है, जो एरियनवाद के प्रति उनकी प्रतिक्रिया में हैं, न कि व्याख्या में अलग-अलग जोर से। हमें दो अलग-अलग विकसित स्कूलों के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि हमें धर्मशास्त्र, मोक्ष और क्राइस्टोलॉजी के लिए दो अलग-अलग दृष्टिकोणों के बारे में सोचना चाहिए। अगर हम एंटीओचियन विचारकों, विशेष रूप से तीन मुख्य व्यक्तियों, थियोडोर ऑफ टार्सस, थियोडोर ऑफ मोप्सुएस्तिया और नेस्टोरियस के बारे में सोचते हैं, जिनकी चर्च द्वारा निंदा की गई थी, तो हमें उनके क्राइस्टोलॉजी को गैर-रूढ़िवादी के रूप में देखना चाहिए।

जैसा कि फेयरबर्न ने उल्लेख किया है, इन तीनों विचारकों ने मसीह को विभाजनकारी दृष्टि से देखा और इस प्रकार ईश्वरीय लोगो के बजाय कल्पित मनुष्य पर अपना जोर दिया, उद्धारण बंद करें। इसलिए, शब्द-मनुष्य बनाम शब्द-मांस की हमारी चर्चा में, हम इन विचारों को विभिन्न

विद्यालयों से नहीं जोड़ेंगे। इसके बजाय, हम उन्हें मसीह की मानवता की प्रकृति के केंद्रीय मुद्दे से जोड़ेंगे।

इस चेतावनी के साथ, आइए अब इन दो दृष्टिकोणों का वर्णन करें। तो, शब्द-मांस दृष्टिकोण क्या है और मसीह की मानवता को समझने के लिए इसके निहितार्थ क्या हैं? दृष्टिकोण यह है: अवतार में, पुत्र, लोगो, एक मानव आत्मा की जगह लेता है और मानव शरीर के साथ एकता में प्रवेश करता है ताकि एक मानव प्राणी बन सके। लेकिन, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि जो खो गया है वह मसीह की पूरी मानवता है।

ऐसा क्यों? आम तौर पर, चर्च की पहचान मानव आत्मा से की जाती है, एक संपूर्ण मानव मनोविज्ञान जिसमें तर्क, इच्छा, बुद्धि, भावनाएँ आदि शामिल हैं। लेकिन मसीह में मानव आत्मा के बिना, या यहाँ तक कि पुत्र द्वारा इसके प्रतिस्थापन के बिना, एक शब्द-मांस दृष्टिकोण मसीह की पूरी मानवता को कमज़ोर करता है और इस बात का हिसाब लगाने में कठिनाई होती है कि देहधारी पुत्र मानवीय भावनाओं और अनुभवों की पूरी श्रृंखला का अनुभव कैसे कर सकता है ; मुझे खेद है, और रिश्ते, सबसे महत्वपूर्ण रूप से हमारे उद्धारक के रूप में कार्य करते हैं। इसके अलावा, शब्द-मांस दृष्टिकोण या तो मसीह के विचारों की एक प्रकृति, मोनोफ़िज़िज़्म , या दो प्रकृति के बजाय किसी प्रकार की मिश्रित प्रकृति का समर्थन करते थे ।

इसके विपरीत, एक शब्द-मनुष्य दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि अवतार में, दिव्य पुत्र ने एक पूर्ण मानव प्रकृति, शरीर और आत्मा को ग्रहण किया, और इस प्रकार एक पूर्ण मानव मनोविज्ञान, जिसमें प्रकृति-व्यक्ति भेद पर निर्माण करते हुए जानने और इच्छा करने की संपूर्ण गतिविधि शामिल है। इस दृष्टिकोण ने कहा कि व्यक्ति अपनी प्रकृति का विषय है, कि व्यक्ति अपनी प्रकृति का विषय है जो अपनी प्रकृति में और उसके माध्यम से कार्य करता है। क्राइस्टोलॉजी के संदर्भ में, तब, पुत्र का व्यक्ति, यह देखते हुए कि उसने एक पूर्ण मानव प्रकृति ग्रहण की है, अब वह पूरी तरह से मानव जीवन जीने में सक्षम है, साथ ही वह पिता और आत्मा के संबंध में कैसे रहता है।

लेकिन मानव जीवन जीने के लिए, पुत्र को केवल शरीर या मांस से अधिक की आवश्यकता थी। मनुष्य के रूप में इच्छा करने, कार्य करने और अनुभव करने के लिए उसे मानव आत्मा की भी आवश्यकता थी। जैसे-जैसे चर्च चाल्सेडन की ओर आगे बढ़ा, मसीह की मानवता के बारे में उसकी समझ शब्द-मनुष्य दृष्टिकोण को अपनाने से अधिक सटीक हो गई।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से मसीह की पूर्ण मानवता पर जोर देता है, और चर्च जानता था कि जब तक शब्द-मनुष्य दृष्टिकोण को अपनाया नहीं जाता, तब तक वह इस शिक्षा को नहीं समझा सकता। अंततः, चर्च जानता था कि जो दांव पर लगा था वह उद्धार था। यदि पुत्र ने व्यक्तिगत रूप से हमारे पूर्ण मानव स्वभाव को ग्रहण नहीं किया और मनुष्य मसीह यीशु के रूप में हमारे स्थान पर नहीं जीया और नहीं मरा, तो वह हमें कैसे छुड़ा सकता है? इसके अलावा, जैसा कि शब्द-मनुष्य दृष्टिकोण ने जोर दिया, मसीह के लिए एक स्वभाव या दो अपूर्ण स्वभाव होना पर्याप्त नहीं था।

ईश्वरीय पुत्र के रूप में उन्हें दो स्वभावों की आवश्यकता थी, इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि वे एक साथ पूर्ण रूप से ईश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य कैसे हैं। इन धार्मिक विकासों के साथ, आइए अब हम तीन विधर्मों की ओर मुड़ें जो निकेया और चाल्सेडोन के बीच के वर्षों में उत्पन्न हुए, जिसके परिणामस्वरूप मसीह संबंधी स्पष्टता और अधिक बढ़ गई। इन विधर्मों के प्रति चर्च की प्रतिक्रिया में, हम एक बार फिर विधर्म के सकारात्मक पक्ष को खोजते हैं।

चर्च में अधिक स्पष्टता और सटीकता अवतार के आश्चर्य और महिमा के साथ कुशती कर रही है। हमारा मतलब यह नहीं है कि विधर्म अपने आप में सकारात्मक हैं, लेकिन भगवान ने विवादास्पद धर्मशास्त्र में चर्च का नेतृत्व किया है, और वह चर्च को त्रुटि को हराने के लिए सत्य की खोज करने, समझने, स्वीकार करने और प्रचार करने के लिए मजबूर करता है। निकेया से लेकर चाल्सीडॉन तक, झूठे क्राइस्टोलॉजिकल रास्ते।

त्रिमूर्तिवादी रूढ़िवाद की स्थापना के बाद, आगे चलकर मसीह संबंधी स्पष्टता आई, जिसके परिणामस्वरूप चाल्सेडोनियन परिभाषा, चाल्सेडोन की परिषद का कथन और निश्चित मसीह संबंधी पुष्टि हुई। विशेष रूप से, व्यक्ति-प्रकृति भेद, मसीह की मानवता की प्रकृति और उसके व्यक्तित्व की एकता में अधिक सटीकता प्राप्त हुई, क्योंकि मसीह के बारे में तीन झूठे विचारों को अस्वीकार कर दिया गया था। चाल्सेडोन के सकारात्मक सूत्रीकरण पर लौटने से पहले आइए हम पहले देखें कि चर्च ने क्या अस्वीकार किया।

अपोलिनेरियनवाद। अपोलिनेरियनवाद का श्रेय अपोलिनारियस को दिया जाता है, जो लाओडिसिया के बिशप थे, 315-392, जो मसीह के देवता, अच्छे, और निकेन ऑर्थोडॉक्सी, अच्छे के कट्टर रक्षक थे। वह अथानासियस, अच्छे का बहुत अच्छा दोस्त था, लेकिन उसके अलग-अलग क्राइस्टोलॉजिकल विचारों के कारण, विशेष रूप से मसीह के मानव स्वभाव की उसकी समझ में, अथानासियस और तीन कैप्पाडोसियन धर्मशास्त्रियों ने बाद में उसका विरोध किया, दुख की बात है, अच्छा।

उनके विचार को कई चर्च परिषदों ने खारिज कर दिया, जिसमें 362 में अलेक्जेंड्रिया की धर्मसभा और सबसे महत्वपूर्ण रूप से 381 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद शामिल है। अपोलिनरियस के विचार ने अवतार की एक क्लासिक शब्द-मांस समझ का प्रतिनिधित्व किया, न कि शब्द-मनुष्य का। उन्होंने पुष्टि की कि ईश्वर पुत्र ईश्वर पिता के साथ एकरूप था, इस प्रकार पूरी तरह से ईश्वर, फिर भी अवतार में, पुत्र ने अपने लिए एक अपूर्ण मानव प्रकृति, एक मानव शरीर, मांस लिया, लेकिन एक मानव आत्मा नहीं।

उन्होंने इस विचार से बचने की कोशिश की कि अवतार केवल मनुष्य में निवास करने वाला ईश्वर है। इसके बजाय, जैसा कि ग्रिलमेयर ने उल्लेख किया है, अपोलिनरियस के लिए, अवतार केवल तभी होता है जब दिव्य न्यूमा, थूक और सांसारिक सारक्स, मांस, एक साथ मिलकर इस तरह से एक पर्याप्त एकता बनाते हैं कि मसीह में मनुष्य पहले इन दो घटकों के मिलन के माध्यम से एक मनुष्य बन जाता है। दूसरे शब्दों में, मसीह में, एक स्वर्गीय तत्व, लोगो, और एक सांसारिक तत्व, मानव शरीर का एक पर्याप्त मिलन है।

निश्चित रूप से, ईश्वर-मनुष्य, मसीह के अंग समतुल्य नहीं हैं। जैसा कि ग्रिलमेयर बताते हैं, उद्धारण, दिव्य न्यूमा, आत्मा, पूरे समय अपनी श्रेष्ठता बनाए रखती है। यह जीवन देने वाली आत्मा बन जाती है, शारीरिक प्रकृति का प्रभावी चालक, और दोनों मिलकर जीवन और अस्तित्व की एकता बनाते हैं, दिव्य न्यूमा, या लोगो के साथ, जो शरीर को निर्देशित और सक्रिय करता है, अरस्तू की रूप-पदार्थ योजना के समान।

अंतिम परिणाम यह है कि मसीह एक हो गया है, उसका स्वभाव एक है, अर्थात् एक ही है। फ्यूसिस, दो नहीं, एक समग्र एकता, दिव्य लोगो और मानव शरीर की एक जीवित एकता, जो स्वयं-निर्धारित व्यक्ति का निर्माण करती है जिसे हम नासरत के यीशु के रूप में जानते हैं। अपोलिनारियस के लिए, इस समग्र एकता और अवतार के एक प्रकृति के दृष्टिकोण को देखते हुए, मसीह में गुणों का एक वास्तविक आदान-प्रदान है। हम बाद में इस पर चर्चा करेंगे।

गुणों का आदान-प्रदान, संचार इंडियोमेटम, ईश्वरत्व और मानवता का एक प्रकार का मिश्रण, जिससे मसीह पूर्ण रूप से ईश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य है, वास्तविक प्रकृति के अर्थ में नहीं, जिसमें सूर्य का व्यक्ति दोनों प्रकृतियों में विद्यमान है, बल्कि एक मिश्रित प्रकृति के अर्थ में, या जिसे ग्रिलमेयर ने कहा है एक प्राकृतिक एकता का आह्वान करता है। मुख्य रूप से समाजशास्त्रीय आधार पर, चर्च ने इस दृष्टिकोण को दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। यदि मसीह पूर्ण मानव स्वभाव को ग्रहण नहीं करता है, तो वह हमारा प्रतिनिधित्व और उद्धार नहीं कर सकता है।

ग्रेगरी ऑफ नाजियानजस ने चर्च की स्थिति को अपने प्रसिद्ध कथन में अच्छी तरह से व्यक्त किया, जो माना नहीं जाता वह ठीक नहीं होता। जो माना नहीं जाता वह ठीक नहीं होता। क्या उसने केवल हमारे शरीर को बचाया, या वह हमारे शरीर और आत्मा को बचाने के लिए आया था? मसीह के लिए प्रतिनिधि वाचागत प्रमुख और प्रतिस्थापन के रूप में सेवा करने के लिए, उसे पूर्ण मानव स्वभाव, शरीर और आत्मा को धारण करना होगा।

अन्यथा, हमारा उद्धार अधूरा है। इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करके, चर्च ने रेत में एक रेखा खींच दी। उद्धारशास्त्र के लिए एक उचित क्राइस्टोलॉजी आवश्यक है।

वास्तव में उद्धार करने वाले उद्धारक के लिए, उसे पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य होना चाहिए। मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए देहधारी हुआ।

यही कारण है। इसके अलावा, चर्च द्वारा अपोलिनेरियनवाद को अस्वीकार करने से तीन महत्वपूर्ण मुद्दे फिर से उभरे। सबसे पहले, जब चर्च ने त्रित्ववादी धर्मशास्त्र में व्यक्ति और प्रकृति को ध्यान से अलग किया, तो इसका क्राइस्टोलॉजी से भी लेना-देना था और उसने एक मसीह में दो प्रकृतियों के होने का दावा किया, न कि एक के लिए।

दूसरा, चर्च ने शब्द-मांस क्राइस्टोलॉजी को अपर्याप्त मानकर खारिज कर दिया, इस प्रकार मसीह की मानव आत्मा की वास्तविकता की पुष्टि की, जिसमें मानव इच्छा, मन और मनोविज्ञान

शामिल है। तीसरा, चर्च ने जोर देकर कहा कि मसीह का एकीकृत सक्रिय विषय व्यक्ति एक दिव्य पुत्र है जिसने खुद को एक पूर्ण मानवता में जोड़ा है, और इस प्रकार, व्यक्ति लोगो और मानव शरीर के संयोजन द्वारा निर्मित एक समग्र संघ नहीं है, न ही यह, जैसा कि नेस्टोरियस बाद में तर्क देगा, दो व्यक्तिगत प्राणियों का संयोजन या मिलन है। इसके बजाय, सक्रिय विषय शाश्वत पुत्र है जिसने अपनी सभी क्षमताओं के साथ एक मानव प्रकृति को ग्रहण किया, इस प्रकार उसे पूरी तरह से मानव और दिव्य जीवन जीने की अनुमति दी।

नेस्टोरियनवाद। नेस्टोरियनवाद की पहचान, जैसा कि आप अनुमान लगा सकते हैं, नेस्टोरियस (381 से 451) से की जाती है, जो 428 से 431 तक कांस्टेंटिनोपल का आर्कबिशप था, जिसे 431 में इफिसस की परिषद में दोषी ठहराया गया था। इस बात पर एक वैध बहस है कि क्या नेस्टोरियस स्वयं नेस्टोरियन था, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि नेस्टोरियस और अलेक्जेंड्रिया के सिरिल, जिसने उसके खिलाफ आरोप लगाए थे, के बीच बहस बहुत गरम थी।

आगे हम मान लेंगे कि नेस्टोरियस ने नेस्टोरियनवाद को माना। यह बहुत बहस का विषय है, और मुझे सिखाया गया था कि नेस्टोरियस नेस्टोरियन नहीं है, इसलिए मैं इसे बहस का विषय ही रहने दूँगा, और मैं इन चीजों के बारे में अधिक जानकारी के लिए तैयार हो जाऊँगा और कहूँगा कि शायद इसे इस दिशा में मोड़ दिया जाना चाहिए कि वह आखिरकार नेस्टोरियन था। नेस्टोरियनवाद को अक्सर क्राइस्टोलॉजी के लिए एक शब्द-व्यक्ति दृष्टिकोण के साथ पहचाना जाता है, फिर भी यह मसीह के व्यक्तित्व की एकता के सवाल पर लड़खड़ा जाता है।

इसलिए, मनुष्य शब्द को धारण करने का यह मतलब नहीं है कि आपने सब कुछ सही समझा है। ग्रीसिसिज्म की तरह, एक दिव्य पुत्र को धारण करना जो नीचे आता है, पूरी तरह से नीचे नहीं, दिव्य पुत्र से शुरू करना, आपके क्राइस्टोलॉजी को सही नहीं बनाता है। यह अधिक जटिल है।

यह एक दिव्य पुत्र है जो वास्तव में अवतार लेता है। इससे डोसेटिज्म खत्म हो जाता है। इस मामले में, शब्द-मनुष्य सही है, न कि केवल शब्द-मांस, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है।

यह एक व्यक्ति में दो स्वभावों वाला शब्द-मनुष्य है, न कि दो व्यक्तियों में या ऐसा कुछ। नेस्टोरियस की चिंता अपने शिक्षक, मोप्सुएस्टिया के थियोडोर का अनुसरण करते हुए, मसीह की पूर्ण मानवता पर जोर देना था, अपोलिनारियस के विपरीत, और इस प्रकार दो स्वभावों में मसीह की पूर्ण ईश्वरत्व और मानवता। अच्छा? अच्छा।

फिर भी, मसीह के दो स्वभावों पर जोर देते हुए, उन्होंने मसीह के व्यक्तित्व और उसमें दो स्वभावों के एकीकरण के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। व्यक्ति के मिलन, प्रोसोपोन के बारे में बोलते हुए, उन्होंने इसे एक समग्र मिलन के रूप में माना, लेकिन अपोलिनारियस द्वारा सिखाए गए तरीके से समग्र नहीं, अर्थात् मसीह के प्रोसोपोन को बनाने के लिए दिव्य और मानवीय स्वभावों का संयोजन। इसके बजाय, जैसा कि फेयरबर्न बताते हैं, नेस्टोरियस ने इसे एक समग्र मिलन के रूप में देखा जिसमें दो व्यक्तिगत विषयों का संयोजन या एकीकरण शामिल था।

नहीं, नहीं, नहीं। व्यक्तित्व स्वयं पुत्र में पाया जाता है, लोगो और मनुष्य, दो व्यक्तिगत विषय, लोगो और मनुष्य, ताकि उन्हें एक ही प्रोसोपोन कहा जा सके, इस प्रकार मसीह में दो व्यक्तियों को सिखाने का प्रभार। फ्रेड सैंडर्स ने मसीह के व्यक्तित्व के बारे में नेस्टोरियस के दृष्टिकोण को पकड़ लिया है।

फ्रेड सैंडर्स के पास त्रिदेवों पर बहुत अच्छी, ठोस और समझने योग्य पुस्तकें हैं, जिन्हें मैं प्रभु के लोगों को पढ़ने की सलाह देता हूँ। फ्रेड सैंडर्स नेस्टोरियस के मसीह के व्यक्तित्व के बारे में दृष्टिकोण को इस तरह से व्यक्त करते हैं। नेस्टोरियस के लिए, यीशु मसीह एक व्यक्ति के रूप में अवतार का परिणाम है या यह बात करने का एक तरीका है कि ये दो बहुत अलग-अलग संस्थाएँ, ईश्वर पुत्र और मनुष्य यीशु, एक साथ क्या कर रहे हैं।

इस प्रकार, मसीह में एक व्यक्तिगत मिलन है, लेकिन यह एक मिश्रित प्रकृति का व्यक्तिगत मिलन है जिसमें मसीह के व्यक्तिगत विषय पर जोर दिया गया है, जो कि ग्रहण किए गए व्यक्ति के रूप में है। फेयरबर्न ने नेस्टोरियस के दृष्टिकोण को दो भागीदारों से बनी एक फर्म से तुलना करके स्पष्ट किया है, जिनमें से एक को वास्तव में कभी नहीं देखा जाता है, लेकिन जिसका प्रभाव फर्म के सभी निर्णयों में लगातार महसूस किया जाता है। दृश्यमान भागीदार मनुष्य यीशु के समान है, फिर भी लोगो वह है जो उसके पीछे खड़ा है।

मसीह, पुत्र और प्रभु जैसे शब्द दोनों के बीच सहयोग द्वारा बनाई गई कॉर्पोरेट एकता को संदर्भित करते हैं। एकता एक अर्थपूर्ण है क्योंकि मसीह नामक व्यक्ति भागीदारों की जोड़ी को दर्शाता है, लेकिन मसीह के अस्तित्व का वास्तविक व्यक्तिगत केंद्र इस प्रकार मनुष्य यीशु स्वयं के रूप में समझा जाता है। नेस्टोरियस तब मसीह में एकता व्यक्त करता है, लेकिन केवल बाहरी दिखावे के अर्थ में।

बाथोरेलोस के अनुसार, संघ का व्यक्ति, मसीह में ईश्वरीय और मानव के बीच केवल एक बाहरी एकता को दर्शाता है, उद्धरण बंद करें। नेस्टोरियस के दृष्टिकोण के पीछे, उनके शिक्षक थियोडोर के साथ, मोक्ष और अनुग्रह की एक अलग अवधारणा है। फेयरबर्न मोक्ष के अपने दृष्टिकोण को दो-कार्य वाली व्यवस्था योजना के रूप में चित्रित करते हैं, जिसका हमारे विचार से व्यवस्थावाद से कोई लेना-देना नहीं है।

उद्धरण, उद्धरण नहीं, मैं मानवता के स्वाभाविक निष्कर्ष का सारांश दे रहा हूँ, मैं अभी फेयरबर्न को उद्धृत नहीं कर रहा हूँ; मानवता की स्वाभाविक स्थिति नश्वरता, परिवर्तनशीलता और अपूर्णता की थी, पहला कार्य या चरण, और मोक्ष अमरता, अविनाशीता और पूर्णता की एक मौलिक रूप से भिन्न अवस्था की ओर बढ़ना है, दूसरा कार्य या चरण। उदाहरण के लिए, पहले कार्य का वर्णन करते हुए, थियोडोर स्पष्ट नहीं है कि क्या यह ऐतिहासिक पतन का परिणाम है जिसमें, आदम में, हम नैतिक रूप से अच्छी स्थिति से गिर गए। ऐसा लगता है कि वह यह मानता है कि यह चरण शुरू से ही मानवता की स्थिति है।

यदि ऐसा है, तो उद्धार गिरी हुई मानवता को उसकी मूल स्थिति में पुनर्स्थापित करना नहीं है, बल्कि "इसके बजाय, यहाँ फेयरबर्न का एक उद्धरण है, मानवता को पूरी तरह से नई स्थिति में ले

जाना।" साथ ही, उद्धार के ऐसे दृष्टिकोण में, ईश्वर की कृपा को सहयोगात्मक के रूप में देखा जाता है, जो मनुष्यों को दूसरे चरण तक पहुँचने में सक्षम बनाता है, जिसमें मसीह ईश्वर की कृपा के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में कार्य करता है। मसीह का जीवन पहला जीवन है जो पहले से दूसरे चरण तक जाता है, और परिणामस्वरूप, मूसा के कानून की पूर्ति ने हमें कानून बनाने वाले के ऋण से मुक्त कर दिया।

उनके बपतिस्मा ने हमें हमारे बपतिस्मा के अनुग्रह का एक मॉडल दिया, उनकी आज्ञाकारिता सुसमाचार के जीवन का एक आदर्श मॉडल थी, और उनके क्रूस पर चढ़ने और पुनरुत्थान ने अंतिम शत्रु, मृत्यु को नष्ट कर दिया, और हमें नया अमर जीवन दिखाया, फेयरबर्न को उद्धृत करते हुए। इस तरह, इब्रानियों 2:0 की भाषा में, मसीह आर्केगोस, अग्रणी और पथप्रदर्शक है जो दूसरे चरण को पार करता है और जो हमारे लिए मोक्ष खोलता है। यह इस कारण से है, इस विश्वास के साथ कि लोगो पीड़ित या मर नहीं सकता था, कि थियोडोर और नेस्टोरियस मसीह की मानवता पर बहुत जोर देते हैं और इस प्रकार स्पष्ट रूप से उसके देवता और मानवता को अलग करते हैं।

नेस्टोरियस के लिए, लोगो ने यीशु के जीवन की मानवीय घटनाओं में भाग नहीं लिया। मसीह में ईश्वरत्व और मानवता के बीच स्पष्ट अंतर थियोडोर और नेस्टोरियस को यीशु की मानवता के साथ इस तरह से पेश आने के लिए प्रेरित करता है जैसे कि वह एक स्वतंत्र व्यक्ति या विषय हो, जैसे कि लोगो की भूमिका ग्रहण किए गए व्यक्ति के कार्यों के साथ उसके सहयोग के संदर्भ में हो। लड़का, क्राइस्टोलॉजी पेचीदा है, है न? इसमें कोई संदेह नहीं है, थियोडोर और नेस्टोरियस पुष्टि करते हैं कि मसीह पूरी तरह से अद्वितीय है।

परमेश्वर का उसमें वास करना बिल्कुल वैसा ही नहीं था जैसा कि उसका हम में वास करना। यीशु ने अनुग्रह और वास को पूर्ण रूप से प्राप्त किया क्योंकि वह पूरी तरह से लोगो के साथ एक हो गया था। वह अनुग्रह का सर्वोच्च उदाहरण और अनुग्रह का एक अनूठा मामला दोनों है।

फिर भी अवतार में, ग्रहण किए गए व्यक्ति पर जोर दिया जाता है और यूनियन लोगो के निवास के संदर्भ में अधिक व्याख्या करती हैं, ताकि मसीह में एकल प्रोसोपोन व्यक्ति लोगो और ग्रहण किए गए व्यक्ति के बीच सहकारी एकता को संदर्भित करने का एक तरीका है जो दोनों पर लागू होने वाले शीर्षकों का उपयोग करता है। फेयरबर्न फिर से, फेयरबर्न ने निष्कर्ष निकाला कि मसीह को देखने का यह तरीका यह दर्शाता है कि कोई यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता है कि वह, नेस्टोरियस, मसीह में एकल व्यक्तिगत विषय को लोगो या पुत्र के रूप में देखता है। वास्तव में, यह ठीक इसी बिंदु पर है कि सिरिल और बाद में चाल्सेडोनियन परिभाषा नेस्टोरियस के साथ सीधे संघर्ष में खड़ी है।

रूढ़िवादी के लिए, मसीह में व्यक्तिगत विषय शाश्वत पुत्र है। लेकिन नेस्टोरियस के लिए, यह किसी तरह का मिश्रित है। यह आंशिक रूप से नेस्टोरियस द्वारा क्रिस्टोटोकोस, मसीह-वाहक शब्द के उपयोग को स्पष्ट करता है, जबकि सिरिल और चाल्सेडन द्वारा मैरी के संदर्भ में थियोटोकोस, ईश्वर-वाहक शब्द का उपयोग किया जाता है।

लोगो की श्रेष्ठता, मसीह के दो स्वभाव, और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मसीह में व्यक्तिगत विषय दो व्यक्तिगत विषयों, लोगो और मनुष्य का एक संयुक्त संघ है, न कि केवल दिव्य पुत्र, नेस्टोरियस ने थियोटोकोस शब्द को अस्वीकार कर दिया। नेस्टोरियस के लिए, मैरी अपने व्यक्तित्व के साथ केवल मसीह की मानवता को धारण करती है। और चूँकि ईश्वर के रूप में लोगो मनुष्य से अलग है, इसलिए थियोटोकोस को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

दूसरी ओर, सिरिल, जिनकी मृत्यु 444 में हुई, ने रूढ़िवादी चर्च के साथ-साथ थियोटोकोस पर जोर दिया, क्योंकि वह मसीह के व्यक्ति की एकता को बनाए रखने के बारे में चिंतित थे और रूढ़िवादी के साथ, मसीह में एकल व्यक्तिगत विषय को शाश्वत पुत्र के रूप में देखना चाहते थे, न कि दो व्यक्तिगत विषयों का संयुक्त मिलन, क्योंकि दोनों प्रकृतियों का व्यक्तिगत विषय पुत्र है, क्योंकि कोई भी प्रकृति स्वयं को प्रत्येक प्रकृति के सक्रिय विषय के रूप में पुत्र के साथ मिलन के अलावा व्यक्त नहीं करती है, और क्योंकि प्रकृतियों में से किसी एक के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, वह उसके बारे में पुत्र के रूप में कहा जा सकता है। यह कहना आवश्यक है कि मरियम ईश्वर-वाहक है इस अर्थ में कि यीशु, जो मरियम से पैदा हुआ, देहधारी पुत्र है, न कि केवल एक मनुष्य जो लोगो द्वारा निवास करता है। थियोटोकोस, तब, वास्तव में मरियम या मरियम के उत्थान के बारे में

थियोटोकोस मसीह के ईश्वरत्व और इस तथ्य को रेखांकित करता है कि मसीह का व्यक्तिगत विषय शाश्वत पुत्र है, जो अब दो प्रकृतियों में रहता है। उसने अपने गर्भ में ईश्वर को जन्म दिया। उसे कोई श्रेय नहीं दिया गया।

एक ईश्वरीय सेवक जिसे प्रभु ने इस्तेमाल किया, हमें उसका उसी तरह सम्मान करना चाहिए, यहाँ तक कि उसका आदर भी करना चाहिए, लेकिन पूजा या उस तरह की किसी भी चीज़ के जैसा कुछ नहीं। हम उसका सम्मान एक ईश्वरीय महिला के रूप में करते हैं। हम यूसुफ को एक ईश्वरीय पुरुष के रूप में सम्मान दे सकते हैं, माना कि उसका हिस्सा उससे ज़्यादा था, लेकिन उसने अपने गर्भ में जो जन्म लिया वह ईश्वर था, न कि केवल मसीह, जैसा कि नेस्टोरियस ने कहा, क्योंकि उसने मसीह के व्यक्तित्व को उसके मानवीय स्वभाव से अलग कर दिया था।

जाहिर है, एक मानव व्यक्ति की ओर से, इस बहस ने रूढ़िवाद को नेस्टोरियनवाद से अलग करने वाले अन्य निष्कर्षों को भी जन्म दिया। उदाहरण के लिए, इस सवाल के संबंध में कि क्या ईश्वर पीड़ित हो सकता है, सिरिल और नेस्टोरियस दोनों इस बात पर सहमत थे कि ईश्वर अगम्य है और पीड़ित होने में असमर्थ है। हालांकि, थियोडोर और नेस्टोरियस के विपरीत, सिरिल ने पुष्टि की कि ईश्वर पुत्र, मानव प्रकृति के सक्रिय विषय के रूप में, पूरी तरह से मानव जीवन जीने में सक्षम है और इस प्रकार उस मानव प्रकृति में पीड़ा और मृत्यु का अनुभव करता है।

सिरिल के प्रसिद्ध शब्दों में, मसीह ने अविचल रूप से पीड़ा सही, या अधिक सटीक रूप से कहे तो, पुत्र ने अविचल रूप से अपने मानव स्वभाव के कष्टों को अपना बना लिया। सिरिल यह नहीं कह रहे थे कि मसीह के मानव स्वभाव में कोई परिवर्तन या कमी आई है, क्योंकि अवतार में, पुत्र ने अपने दिव्य स्वभाव के अलावा एक पूर्ण मानव स्वभाव भी ग्रहण किया, लेकिन इसका अर्थ यह था कि पुत्र अब एक दिव्य और मानवीय जीवन जीने में सक्षम है। थियोडोर और नेस्टोरियस के

क्राइस्टोलॉजी को चर्च द्वारा अस्वीकार करना अक्सर बुरा था, जैसा कि सिरिल-नेस्टोरियस विवाद में स्पष्ट है, लेकिन यह आवश्यक था।

अगर यह बुरा नहीं होता तो बेहतर होता, लेकिन यह वैसा ही था। आखिरकार, दो महत्वपूर्ण मुद्दे दांव पर थे: पहला, मसीह के व्यक्तित्व की एकता।

नेस्टोरियस इसे स्पष्ट नहीं कर सका और इसके बजाय दो व्यक्तिगत विषयों, लोगोस और मनुष्य के संयुक्त मिलन की अपील की। लेकिन शास्त्र यह नहीं कहता कि मसीह का मानव स्वभाव एक स्वतंत्र व्यक्ति है जो दिव्य लोगोस के साथ किसी संबंध में कार्य करता है। इसके बजाय, शास्त्र एक एकल व्यक्ति, दिव्य पुत्र की एक सुसंगत तस्वीर खींचता है, जो अब दो प्रकृतियों में एक एकीकृत विषय के रूप में कार्य करता है, एक बिंदु जिसे चाल्सेडन दृढ़ता से स्वीकार करेगा।

वास्तव में, यह केवल तभी संभव है जब हम इस महत्वपूर्ण बिंदु की पुष्टि करते हैं कि हम गोद लेने के किसी भी संकेत से बच सकते हैं, कुछ ऐसा जिससे नेस्टोरियस को बचना मुश्किल था। परमेश्वर के पुत्र ने किसी मनुष्य को गोद नहीं लिया। यीशु की मानवता मरियम के गर्भ में अपनी शुरुआत के अलावा कभी अस्तित्व में नहीं आई।

और हम आगे बढ़ते हुए देखेंगे कि क्या उसके पास एक अवैयक्तिक मानवता थी? और यह बाइज़ेंटियम के लेओन्टियस नामक एक सज्जन का श्रेय है, जिसे हम देखेंगे, जिसने अवैयक्तिक शब्द गढ़ा। मसीह की कोई पहले से विद्यमान मानवता नहीं थी, चाहे वह एक अलग व्यक्ति के रूप में हो या मरियम के गर्भ से अलग किसी तरह की इकाई के रूप में। नहीं, मरियम के गर्भ में उसकी मानवता के निर्माण के दूसरे ही पल से, यह पुत्र के साथ, वचन के साथ एक हो गई थी।

इसलिए, यह कभी भी अवैयक्तिक नहीं था। ओह, यह इस अर्थ में अवैयक्तिक था कि यह इस बारे में एक बड़ी लड़ाई और शब्दावली थी। लेकिन मुझे यह अवैयक्तिक चीजें पसंद नहीं हैं।

लेकिन यह सच है। यह इस अर्थ में अवैयक्तिक था कि कोई अलग आदमी नहीं था। ठीक है, लेकिन यह कभी भी वास्तव में अवैयक्तिक नहीं था।

जैसा कि हम देखेंगे, यह हमेशा अवैयक्तिक और हाइपोस्टैसिस में था, मरियम के गर्भ में वचन के साथ मिलन के कारण। क्या आपको समझ में आया? यीशु किसी मनुष्य या अमूर्त मानव प्रकृति में नहीं रहते थे। उनके मानवीय स्वभाव ने मरियम के गर्भ में वचन के साथ मिलन से अपना व्यक्तित्व ग्रहण किया।

इसलिए, अपनी शुरुआत से ही, मानव स्वभाव ईश्वर के शाश्वत पुत्र के साथ एकता के कारण अवैयक्तिक था, जो ईश्वर-मनुष्य बन गया। इसके अलावा क्राइस्टोलॉजी और सोटेरिओलॉजी के बीच महत्वपूर्ण संबंध भी दांव पर था। अंततः, नेस्टोरियन बहस मसीह और मोक्ष के प्रतिस्पर्धी विचारों पर थी।

थिओडोर और नेस्टोरियस की दो-युग की समझ के विपरीत, पवित्रशास्त्र एक सृजन-पतन-मोचन संरचना की पुष्टि करता है। उद्धार के लिए एक अद्वितीय अनुग्रहित व्यक्ति से अधिक की

आवश्यकता होती है जो मानवता के उदाहरण और पथप्रदर्शक के रूप में कार्य करता है। इसके लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो परमेश्वर का पुत्र हो।

मानवीय समस्या गंभीर है। हम ब्रह्मांड के पवित्र परमेश्वर के सामने दोषी हैं। और हमारे संकट का एकमात्र समाधान यह है कि परमेश्वर स्वयं हमें बचाने के लिए कार्य करे ताकि अपनी धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट है। त्रिएक परमेश्वर को बचाना चाहिए, और केवल वही ऐसा कर सकता है। उद्धार परमेश्वर का कार्य है, और केवल परमेश्वर पुत्र ही हमें छुड़ा सकता है।

हमें सिर्फ एक ऐसे मनुष्य की ज़रूरत नहीं है जो परमेश्वर पुत्र के द्वारा वास करता हो या उसके साथ किसी तरह की एकता में जुड़ा हो। हमें एक दिव्य पुत्र की ज़रूरत है जो हमारे मानवीय स्वभाव को अपने व्यक्तित्व में ग्रहण करे ताकि वह हमारा प्रतिनिधित्व कर सके और हमारे नए वाचा के मुखिया और प्रतिस्थापन के रूप में हमारी ओर से कार्य कर सके। आमीन।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और क्राइस्टोलॉजी पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4, पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 3, विकास, झूठे रास्ते, अपोलिनेरियनवाद और नेस्टोरियनवाद है।